प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री राजेश कुमार सिंह** ने मेरे निर्देशन में **'एलोरा की शिव प्रतिमाएँ'** विषय पर डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु शोध–प्रबन्ध विहित अवधि के अन्तर्गत पूर्ण किया है। शोध–प्रबन्ध मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार पर उनका अपना मौलिक शोध–कार्य है। अतः इसको मैं उन्हें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान करने की कार्यवाही हेतु अग्रसारित कर रहा हूँ।

RS Singh

(डॉ० राधेश्याम सिंह)
प्राचार्य
टी०डी० कालेज,
जौनपुर

OP Singh

(डॉ० ओम प्रकाश सिंह)
शोध निर्देशक
रीडर एवं अध्यक्ष,
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
टी०डी० कालेज,
जौनपुर

आमुख

प्रतिमा विज्ञानपरक अध्ययन में विभिन्न पुरातात्विक स्थलों की मूर्ति सम्पदा के उनकी समग्रता में अध्ययन का विशेष महत्व होता है। भारत में खजुराहो, ओसियाँ, भुवनेश्वर, महाबलिपुरम्, कांचीपुरम्, एलोरा, दिलवाड़ा, कुम्भारिया, नालन्दा जैसे महत्वपूर्ण ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन पुरास्थल हैं। किन्तु पुरातात्विक दृष्टि से भारत के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में एलोरा का भी अपना एक विशिष्ट आकर्षण है। विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों एवं उनमें चित्रित कलाकृतियों को देखने के पश्चात् यहाँ के गुफाओं की परामानवीय प्रतीत होने वाली वास्तुकला एवं स्थापत्यकला ने मेरे मन–मस्तिष्क को स्वयं में समन्वित सांस्कृतिक प्रतिमानों का ऐसा सहज साक्षात्कार कराया कि मेरी यह दृढ़ इच्छा बन गई कि यहाँ की कलाकृतियाँ जो पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक प्रतिमानों का जीवन्त–स्वरूप रूपायित करती है। एतद्पश्चात् जब मैने प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग में शोध कार्य करने का निर्णय किया, तो एलोरा में शिव की प्रतिमाओं के अन्वेषण की मेरी हार्दिक अभिलाषा की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त हो गया। स्पष्ट है कि यह शोध विषय मेरी अभिरूचि के सर्वथा अनुरूप था।

एलोरा की गुफाएँ और मूर्तियाँ स्थापत्य, मूर्तिकला और प्रतिमाविज्ञान तीनों ही दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में स्थित एलोरा के इल्वलपुर, एलागिरि और एलापुर जैसे प्राचीन नाम भी रहे हैं। स्थानीय भाषा में इसे बेल्ल कहते हैं। एलोरा ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन तीनों ही प्रमुख भारतीय धर्मों के कला एवं

स्थापत्य की त्रिवेणी रही है, जिस प्रकार गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों की त्रिवेणी संगम प्रयाग में मानी जाती है, उसी प्रकार एलोरा की गुफाओं से प्राप्त अभिलेखों के आध ार पर ऐसा माना जाता है कि भारत की सात महान् नदियों –– सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी मिल कर के एलोरा में तीर्थस्थल बनाते हैं। कलात्मक गतिविधियों के लगभग आठ सौ वर्षों (छठी से तेरहवीं शती ई०) के लम्बे इतिहास के कारण भी एलोरा का अपना विशिष्ट स्थान है।

एलोरा के स्थापत्य तथा मूर्तियों पर देश–विदेश में पर्याप्त शोध–कार्य हुए हैं किन्तु एलोरा की शिव प्रतिमाओं पर अभी तक अपेक्षित विस्तार से कोई अध्ययन नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में हमने शिव की प्रतिमाओं के स्वरूपगत विकास को स्थानीय विकास तथा परिवर्तन की दृष्टि से समझाने का प्रयास किया है, एलोरा की शिव मूर्तियों की शिल्पशास्त्रों से तुलना के साथ ही कुछ विशिष्ट समकालीन कलाकेन्द्र जैसे – खजुराहो, भुवनेश्वर, बादामी, पट्टडकल, एलीफेन्टा तथा अयहोलि जैसे पुरास्थलों की सामग्रियों से भी तुलना के भी प्रयास किये गये हैं और उनके माध्यम से एलोरा की शिव प्रतिमाओं के विकास को उनकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है। प्रतिमानों की स्थिति एवं उनके सन्दर्भ का भी विशेष ध्यान रखा गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कुल छः अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में एलोरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं धार्मिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। इसी अध्याय में ब्राह्मण गुफाओं एवं देवमूर्तियों के निर्माण के सन्दर्भ में चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा देवगिरि के यादवों के संरक्षण तथा ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मों के साथ–साथ विकास एवं उनके पारस्परिक सामंजस्य और आदान–प्रदान का वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में एलोरा के लयण स्थापत्य तथा मूर्तियों की सामान्य विवेचना की गयी है। एलोरा की मूर्तियों एवं स्थापत्य को समग्रता में समझने के उद्देश्य से ब्राह्मण गुफाओं के साथ ही संक्षेप में बौद्ध एवं जैन गुफाओं के भी स्थापत्य एवं मूर्तियों की चर्चा की गयी है।

तीसरे अध्याय में एलोरा की शिव प्रतिमाओं का अध्ययन प्रारम्भ किया जाएगा, प्रारम्भ में संक्षेप में शैव धर्म के उद्‌भव एवं विकास और उसके बाद एलोरा की शिव प्रतिमाओं के वर्गीकरण की चर्चा की जाएगी। तत्पश्चात् एलोरा में उपलब्ध शिव के विभिन्न प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूपों का अलग–अलग विस्तृत निरूपण किया गया है। आवश्यकतानुसार अन्य क्षेत्रों की प्रतिमाओं से भी तुलना का भी प्रयास किया गया है।

चौथे और पॉचवें अध्यायों में शिव की अनुग्रह एवं संहार तथा अन्य मूर्तियों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। छठॉ अध्याय उपसंहार के रूप में है जिसमें सम्पूर्ण अध्ययन का सार–संक्षेप प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार मैने अपनी अभिरूचि के इस शोध–विषय को हर सम्भव प्रयास करके क्रमबद्ध एवं सुसंगठित स्वरूप में निबद्ध किया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरे अभिमत को प्रबुद्ध वर्ग का सहज–समर्थन प्राप्त होगा।

राजेश कुमार सिंह

राजेश कुमार सिंह

आभार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मेरे परम् पूज्यनीय बड़े पिता जी डॉ० राम सेवक सिंह, प्राचार्य, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर एवं श्री सभाजीत सिंह, अवकाश प्राप्त प्राचार्य, प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ सिटी के सहज अनुग्रह की सद्परिणति है। इनकी कृपा के प्रति मैं श्रद्धावनत् हूँ।

मैं डॉ० विनय कुमार सिंह, प्राचार्य, डॉ० शैलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० भारतीराज दीक्षित, डॉ० के०के०वर्णवाल, डॉ० मृत्युंजय सिंह 'परमार', बड़े भाई डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 'वरिष्ठ प्रवक्ता' (मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाकांकर, प्रतापगढ़ (उ०प्र०)) तथा डॉ० लालजी त्रिपाठी, प्राचार्य (मड़ियाहूँ पी०जी० कालेज मड़ियाहूँ), डॉ० वृजभानु सिंह (वरिष्ठ प्रवक्ता), श्रीमती छन्दा चक्रवर्ती (पी०वी०पी०जी० कालेज प्रतापगढ़ सिटी), डॉ० धर्मराज सिंह, प्राचार्य, श्री केशव प्रसाद सिंह, श्री विष्णु प्रसाद पाण्डेय, श्री राम अभिलाष पाण्डेय सदृश गुरूजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, क्योंकि उनका उदार प्रोत्साहन एवं निर्देशन मुझे इस कार्य को सम्पन्न करने में ऐन–केन–प्रकारेण अनवरत् मिलता रहा है।

मैं अपने परम्पूज्य पिता जी डॉ० भवानी सेवक सिंह, प्राचार्य (प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ सिटी), अग्रज श्री संजय कुमार सिंह एवं श्री मनोज कुमार सिंह (एडवोकेट, लखनऊ हाई कोर्ट) तथा बड़ी वहन श्रीमती सीमा सिंह (शोध छात्रा), अनुज श्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह (शोध छात्र), श्री आलोक कुमार सिंह (शोध छात्र), श्री मो० अमीन (प्र०अ०) व श्री सुरेश प्रताप सिंह (स०अ०) एवं समस्त मित्रों को भी अपने हृदय के अन्तःस्थल से आभार प्रकट करता हूँ जिनके स्नेह एवं यथोचित उत्साहवर्द्धन से

शोध–कार्य को सुचारू रूप से संचालन करने में समर्थ हो सका।

इस शोध प्रबन्ध की सकुशल सम्पन्नता का सम्पूर्ण श्रेय पूर्व प्राचार्य डॉ० वी०वी०सिंह, वर्तमान प्राचार्य, डॉ० राधेश्याम सिंह (तिलकधारी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, जौनपुर) तथा प्राचीन इतिहस के प्रकाण्ड विद्वान परम पूज्यनीय गुरू जी डॉ० ओम प्रकाश सिंहरीडर, अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग को ही है, जिनके कुशल निर्देशन एवं पितृतुल्य उदार प्रोत्साहन से यह दुरूह कार्य सुगम से भी सुगमतर बन गया। इनकी प्राचीन भारतीय कला की स्पष्ट, उत्कृष्ट एवं सुदृढ़ पकड़ मेरे लिए एलोरा की शिव प्रतिमाओं के विस्तृत अध्ययन करने हेतु पथ–प्रदर्शक बन गयी। इनकी दृष्टि से प्रतिमाओं की रेखांकित आकृतियाँ प्रतिमा विधान का स्पष्ट चित्र मनमस्तिष्क पर अंकित कर देती है। इन्होंने मुझे इन चित्रों का उद्धरण देने की सहज अनुमति देकर परम् अनुग्रह किया है। मैं इनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

शोध–प्रबन्ध की विस्तृत विवेचना के लिए पी०बी०पी०जी० कालेज, प्रतापगढ़ सिटी, प्रतापगढ़, टी०डी०कालेज जौनपुर, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के पुस्तकालयों की पुस्तकों से काफी सहयोग प्राप्त हुआ एवं इस शोध प्रबन्ध में उद्धृत चित्रों के लिए मैं अमेरिकन इन्स्टीट्यूट आफॅ इण्डियन स्टडीज, रामनगर, वाराणसी एवं डॉ० आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव के ग्रन्थ 'एलोरा की ब्राह्मण देव मूर्तियों' में दिए गये प्रतिमालाक्षणिक तालिकाओं तथा चित्रों से विषय–वस्तु और भी स्पष्ट हुआ है जिनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ तथा आजीवन मैं इनका ऋणी रहूँगा।

इसके अतिरिक्त इस शोध प्रबन्ध में मिश्रा फोटो स्टेट सेन्टर, जौनपुर के प्रोप्राइटर श्री विनय शंकर मिश्र एवं श्री गौरी शंकर यादव का सहयोग बड़ा ही सराहनीय रहा है, जिनका मैं सदैव आभारी रहूँगा। प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान के क्षेत्र में "एलोरा की शिव प्रतिमाएँ" नामक यह शोध प्रबन्ध महत्वपूर्ण योगदान करेगी, ऐसी मैं आशा एवं विश्वास करता हूँ।

राजेश कुमार सिंह

– राजेश कुमार सिंह